कामम् (स्वेच्छानुसार, माना कि)

तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः ?

कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः (माना कि वह मेरे सामने मुँह करके खड़ी नहीं होती तब भी उसकी दृष्टि अधिकांशतः किसी अन्य वस्तु की ओर नहीं है)।

किम् (प्रश्न—क्यों किस कारण से) ?

तत्रैव किं न चपले प्रलयं गतासि (ऐ चपल देवि, तू उसी स्थान पर नष्ट क्यों न हो गयी) ?

किम् (समस्त शब्द खराब या कुत्सित अर्थ में)

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् (जो स्वामी को उचित राय नहीं देता वह क्या मित्र है— वह बुरा मित्र है)।

किमु, किमुत, किं पुनः (क्या कहना है)

(१) एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् (एक भी अनर्थकारी है, जहाँ चारों हों वहाँ कहना ही क्या है ?)

(२) चाणक्येनाहूतस्य निर्दोषस्यापि शंका जायते किमुत सदोषस्य (चाणक्य द्वारा बुलाये जाने पर तो निर्दोष को भी शंका पैदा हो जाती है, तो फिर अपराधी पुरुष का तो कहना ही क्या है) !

(३) स्वयं रोपितेषु तरुषु उत्पद्यते स्नेहः किं पुनरंग-संभवेष्वपत्येषु (अपने लगाये हुए वृक्षों के प्रति स्नेह उत्पन्न हो जाता है, फिर अपनी संतान के प्रति तो कहना ही क्या है)।

किल (कहते हैं, नकली कार्य-घोषित करने के लिए, आशा प्रकट करने के लिए)

(१) बभूव योगी किल कार्तवीर्यः (कहते हैं कि कार्तवीर्य नाम का कोई योगी था)।

(२) प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष (नकली सिंह ने उस (गाय) को जबर्दस्ती खींच लिया)।

(३) पार्थः किल विजेष्यति कुरून् (आशा है कि पार्थ कुरुओं को जीत लेगा)।

केवलम् (क्रि० वि० सिर्फ, किन्तु कभी कभी विशेषण के रूप में भी)

निषेदुषी स्थंडिल एव केवले (सिर्फ स्थंडिल पर बैठती थी—बिना किसी चीज के बिछाये हुए)।

न केवलम् (अपि या किन्तु के साथ)

वसु तस्य विभोर्न केवलं गुणवत्तापि पर प्रयोजना (न सिर्फ उसकी सम्पत्ति ही, बल्कि उसमें अच्छे-अच्छे गुणों का होना भी दूसरों की भलाई के लिए था)।

खलु (क—निश्चय ही,

(क) मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति (सचमुच तेरे कदम रास्ते में इधर-उधर पड़ते हैं)।

ख–प्रार्थना सूचक, ग–शिष्टतापूर्ण प्रश्न करने में, घ–निषेधार्थक क्रिया के साथ, ङ–कारण, च–वाक्यालंकार)

(ख) न खलु न खलु बाणाः सन्निपात्योऽयमस्मिन् (इसके ऊपर बाण न छोड़ा जाय)।

(ग) न खलु तामभिकुद्धो गुरुः (क्या गुरुजी उससे क्रुद्ध नहीं हो गये)?

(घ) निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलुक्त्वा खलु वाचिकम् (जब कोई मामला पत्र द्वारा निर्णीत किया जाता हो तो मौखिक संदेश मत जोड़ दो)।

(ङ) न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः (मैं टुकड़े-टुकड़े नहीं हो रही हूँ, क्योंकि स्त्रियों का हृदय कठोर होता है)।

च (क–आश्रित घटना का मुख्य घटनाओं योग, ख–सामूहिक ऐक्य, ग–पारस्परिक सम्बन्ध, घ–समुच्चय-समूह, ङ–दो घटनाओं का एक साथ होना)

(क) भिक्षामट गां चानय (भीख माँगने जाओ और गाय लेते आना)।

(ख) पाणी च पादौ च पाणिपादम्।

(ग) अश्वत्थश्च न्यग्रोधश्च अश्वत्थन्यग्रोधौ।

(घ) पचति पठति च।

(ङ) ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः (ज्यों ही वे लोग समुद्र पर पहुँचे त्यों ही आदि पुरुष (हरि) जाग पड़े)।

चिरम्, चिरेण (दीर्घ काल से, तक)

चिरं खलु गतः मैत्रेयः (मैत्रेय बहुत पहले जा चुका है)।

जातु (जरा भी, सम्भवतः, कदाचित्)

किं तेन जातु जातेन (सम्भवतः उसके पैदा होने से क्या लाभ)?

न जातु बाला लभते स्म निर्वृतिम् (वह कुमारी जरा भी सुख नहीं भोग पायी)।

ततः (उसके बाद, तो, उसके परे)

(क) ततः कतिपयदिवसापगमे (इसके बाद कुछ दिनों के बीत जाने पर)।

(ख) यदि गृहीतमिदं ततः किम् (यदि यह पकड़ लिया गया तो क्या होगा)?

(ग) ततः परतो निर्मानुपमरण्यम् (उसके परे एक निर्जन वन है)।

ततस्ततः (इसके आगे, कहते चलिए)

राक्षसः—उभयोरस्थाने प्रयत्नः। ततस्ततः (राक्षस-दोनों का प्रयत्न अनुचित था। अच्छा, तो आगे क्या हुआ कहते चलिए)।

तथा (इसी ढंग से, हाँ,

(क) सूतस्तथा करोति (सारथि वैसा ही करता है)।

ऐसा ही हो, इतने निश्चय पूर्वक जितने)

(ख) राजा–एनं तत्र भवतः सकाशं प्रापय। प्रतिहारी तथेति निष्क्रान्ता (राजा–इसे श्रीमान् जी के पास ले जाओ। प्रती०–अच्छा ऐसा ही होगा। ऐसा कहती हुई निकल गयी)।

(ग) यथाहमन्यं न चिन्तये तथायं पततां परासुः (जितना यह निश्चय है कि मैं किसी भी दूसरे पुरुष के बारे में नहीं सोचता हूँ उतने ही निश्चयपूर्वक यह घटना भी घटे कि वह मर जाय।)

तावत् (पहले, बल देने के लिए, विषय में)

(क) आह्लादयस्व तावच्चन्द्रकरश्चन्द्रकान्तमिव (पहले तो मुझे प्रसन्न करो जैसे चन्द्रमा की किरण चन्द्रकान्त मणि को प्रसन्न करती है)।

(ख) त्वमेव तावत् प्रथमो राजद्रोही (तू ही पहला राजद्रोही है)।

(ग) एवं कृते तव तावत् प्राणयात्रा क्लेशं विना भविष्यति (तुम्हारे विषय में, तो ऐसा हो जाने पर तुम्हारी जीविका बिना किसी कष्ट के हो जाया करेगी)।

*तु (परन्तु, और अत्र विभिन्नतासूचक)

(क) सर्वेषां सुखानां प्रायोऽन्तं ययौ। एकं तु सुत-मुखदर्शनसुखं न लेभे (वह सभी सुखों को पूर्णरूप से भोगता था, परन्तु उसने पुत्र मुख दर्शन का सुख कभी नहीं भोगा)।

(ख) अथनिपतिस्तु तामनिमेषलोचनो ददर्श (महा-राज तो उसकी तरफ टकटकी लगाकर देखने लगे)।

(ग) मृष्टं पयो मृष्टतरं तु दुग्धम् (पानी निर्मल होता है, परन्तु दूध और भी निर्मल होता है)।

तूष्णीम् (चुप)

तूष्णीं भव (चुप रहो)।

दिवा (दिन में)

दिवा मा स्वाप्सीः (दिन में मत सोओ)।

दिष्टया (हर्षसूचक)

दिष्टया प्रतिहतं दुर्जातम् (हर्ष की बात है कि विपत्ति टल गयी)।

दिष्टया वृध् (बधाई)

दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्धते (मैं श्रीमान् को आपकी विजय पर बधाई देता हूँ)।

न (नहीं)

नहि, नैतन्मया कर्त्तव्यम् (नहीं, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए)।

नाम (क–नामक,

(क) पुष्पपुरी नाम नगरी (पुष्पपुरी नामक नगरी)।

*तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे।

ख–निश्चय ही, ग–संभवतः, घ–बहानासूचक, ङ–यदि आप चाहें, च–आश्चर्य सूचक, छ–आश्चर्य अथवा निन्दा)

(ख) विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम (अवश्य आश्रमों में बहुत सीधा-सादा वस्त्र पहनकर घुसना चाहिए)।

(ग) को नाम पाकाभिमुखस्य जन्तुर्द्वाराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे (सम्भवतः जब भाग्य अपनी शक्ति दिखलाने पर तुला हो तो भला उसके दरवाजे को कौन बंद कर सकता है ?)

(घ) कार्तान्तिको नाम भूत्वा (ज्योतिषी का बहाना करके ।)

(ङ) एवमस्तु नाम (अच्छा, ऐसा ही हो)।

(च) अन्धो नाम पर्वतमारोहति (आश्चर्य की बात है कि अन्धा आदमी पर्वत पर चढ़ता है)।

(छ) किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि (ओहो, क्या अस्त्र-शस्त्र चमक रहे हैं)।

ननु (सन्देह सूचक प्रश्न, सचमुच, अवश्य ही, सम्बोधार्थक, प्रार्थना, सम्बोधनार्थ में)

(क) स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु (क्या वह स्वप्न था, या धोखा या मस्तिष्क का पागलपन)।

(ख) कथं नु गुणवद् विन्देयं कलत्रम् (सचमुच मैं गुणवती स्त्री कैसे पाऊँ) ?

(ग) यदाऽमेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु (जब मन्दबुद्धि शिष्या उपदेश को नष्ट कर देती है तो क्या वस्तुतः आचार्य का दोष नहीं) ?

(घ) ननु भवान् अग्रतो मे वर्तते (क्यों, आप मेरे सामने हैं—यह सच नहीं है) ?

(ङ) ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् (कृपया आप मुझे मेरे पति के पास पहुँचा दें)।

(च) ननु मूर्खाः पठितमेव युष्माभिस्तत्काण्डे (हे मूर्खो, तुमने उस अध्याय में यह विषय पहले ही पढ़ लिया है)।

(छ) ननु समाप्तकृत्यो गौतमः (क्या गौतम ने अपना कार्य समाप्त कर लिया) ?

नितराम् (अत्यन्त)

नितरामसौ निर्बोधः दरिद्रश्च (यह अत्यन्त दरिद्र और मूर्ख है)।

नूनम् (निश्चय ही, वस्तुतः)

स नूनं तव पाशांश्छेत्स्यति (वह अवश्य ही तुम्हारे जालों को काट देगा)।